TOPIC = सप्रसंग व्याख्या (पद्य भाग)

1. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2018)

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुण तीन ।

जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ॥

मान सहित विष खाय के, संभु भयो जगदीस ।

बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ॥

Ans.

प्रसंग:

यह दोहा रहीम के दोहों के संग्रह "रहीम ग्रंथावली" से लिया गया है। इस दोहे में रहीम ने संगति के महत्व पर प्रकाश डाला है।

सप्रसंग व्याख्या:

रहीम कहते हैं कि कदली, सीप, भुजंग-मुख और स्वाति वर्षा की बूंदें एक ही गुण की हैं, लेकिन वे अलग-अलग स्थानों पर पड़कर अलग-अलग फल देती हैं। कदली में पड़ने से वह कपूर बन जाती है, सीप में पड़ने से वह मोती बन जाती है, भुजंग-मुख में पड़ने से वह विष बन जाती है, और स्वाति नक्षत्र में पड़ने से वह वर्षा का कारण बनती है।

रहीम का मतलब यह है कि मनुष्य भी जिस प्रकार की संगति में रहता है, उसका प्रभाव उस पर पड़ता है। यदि वह अच्छे लोगों की संगति में रहता है, तो वह भी अच्छा बनता है। यदि वह बुरे लोगों की संगति में रहता है, तो वह भी बुरा बन जाता है।

रहीम की इस बात को दो उदाहरणों से समझाया जा सकता है। एक उदाहरण है भगवान शिव का। भगवान शिव ने मान सहित विष पीया था, इसलिए वे जगदीश बने। दूसरा उदाहरण है राहु का। राहु ने बिना मान के अमृत पिया था, इसलिए उसका सिर काटा गया।

व्याख्या:

रहीम के इस दोहे से यह स्पष्ट होता है कि संगति का मनुष्य के जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें हमेशा अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए।

2. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2018)

पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा ।
मुँह पर थी आह्लाद लालिमा, विजय गर्व था झलक रहा ॥
मैंने पूछा, यह क्या लायी? बोल उठी, "माँ काओ।"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा, "तुम खाओ?"
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया ॥
उसकी मंजु मूर्ति देखकर मुझमें नवजीवन आया।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश श्री सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित "बच्ची" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि अपनी बेटी के प्रति प्रेम और स्नेह को व्यक्त करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

कवि अपनी बेटी के आने पर बहुत खुश होते हैं। वे देखते हैं कि उनकी बेटी बहुत खुश और उत्साहित है। उसकी आंखों में कौतूहल है और उसके चेहरे पर आह्लाद की लालिमा है। उसके चेहरे पर विजय और गर्व भी झलक रहा है।

कवि अपनी बेटी से पूछते हैं कि वह क्या लाई है। बेटी कहती है, "माँ काओ।" कवि बहुत खुश होते हैं और कहते हैं, "तुम खाओ।" वे अपनी बेटी की खुशी में शामिल होना चाहते हैं।

कवि अपनी बेटी की मूर्ति में अपना बचपन देखते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें फिर से बचपन मिल गया है। अपनी बेटी के साथ रहकर उन्हें नया जीवन मिल गया है।

व्याख्या:

कवि की बेटी का आगमन उनके जीवन में एक नई खुशी और उल्लास लेकर आता है। बेटी की मासूमियत और खुशी कवि के मन को छू लेती है। कवि अपनी बेटी में अपना बचपन देखते हैं। वे कहते हैं कि बेटी के साथ रहकर उन्हें फिर से बचपन मिल गया है।

कवि की यह कविता पिता-पुत्री के प्रेम और स्नेह का एक सुंदर चित्रण है। यह कविता हमें यह भी सिखाती है कि हमें अपने बच्चों के साथ उनका बचपन जीना चाहिए।

3. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2019)

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर
दावा नागजूह पर सिंह सिरताज को
दावा पूरहत को पहारन के कूल पर
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश कवि भूषण द्वारा रचित "शिवाजी महाराज" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि शिवाजी महाराज के पराक्रम और प्रताप का वर्णन करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

कवि इस पद्यांश में शिवाजी महाराज के प्रताप और दबदबे का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जैसे गरुड़ का नागों पर, सिंह का नागजंघों पर, इंद्र का पर्वतों पर, और बाज का पक्षियों पर दबदबा होता है, वैसे ही शिवाजी महाराज का सारे भारत में दबदबा था।

कवि कहते हैं कि शिवाजी महाराज का प्रताप इतना था कि वे किसी भी शक्ति के सामने नहीं झुकते थे। वे अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम थे।

व्याख्या:

कवि की इस कविता से यह स्पष्ट होता है कि शिवाजी महाराज एक महान योद्धा और शासक थे। उन्होंने अपने पराक्रम और प्रताप से भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाया।

कवि इस पद्यांश में शिवाजी महाराज के प्रताप को विभिन्न प्राणियों के उदाहरणों से व्यक्त करते हैं। यह एक सुंदर और प्रभावशाली ढंग से शिवाजी महाराज के पराक्रम का वर्णन है।

4. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2019)

आ जा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शान्ति ।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली यह अपनी प्राकृत विश्रान्ति ।।
वह भोली सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप ।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप ।।
मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी ।
नंदन-वन-सी फूल उठी वह छोटी सी कुटिया मेरी ।।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित "मेरा नया बचपन" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवियत्री अपने बचपन की यादों को ताजा करती हैं और अपने वर्तमान जीवन की व्यस्तताओं से बचने के लिए बचपन की मासूमियत और सरलता की कामना करती हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

कवियत्री अपने बचपन को बुलाते हुए कहती हैं कि हे बचपन, एक बार फिर आकर मुझे अपनी निर्मल शान्ति दे। वह शान्ति जो मेरी व्याकुल व्यथा को मिटा दे। बचपन की भोली सी मधुर सरलता और निष्पाप जीवन मुझे फिर से मिल जाए। क्या तू मेरे मन के संताप को मिटा सकता है?

कवियत्री की यह व्यथा है कि जैसे-जैसे वह बड़ी होती जा रही है, उसे जीवन की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उसे चिंताओं और परेशानियों से घिर जाना पड़ रहा है। वह अपने बचपन की मासूमियत और सरलता को खोती जा रही है। इसलिए वह बचपन को वापस बुलाने की कामना करती है।

व्याख्या:

कवियत्री की इस कविता से यह स्पष्ट होता है कि बचपन एक बहुत ही सुंदर और आनंदमय अवस्था होती है। बचपन में मनुष्य की चिंताएँ और परेशानियाँ कम होती हैं। वह जीवन को अधिक सरल और सहज रूप में जीता है। बचपन की मासूमियत और सरलता मनुष्य के जीवन को सुंदर बनाती है।

कवियत्री के इस आह्वान से यह भी पता चलता है कि मनुष्य अपने बचपन को कभी नहीं भूल सकता। वह हमेशा अपने बचपन की यादों में खोया रहता है।

5. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2020)

बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजें ।

तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजें ॥

बृथा बहति जमुना, खग बोलके, वृथा कमल फूल अलि गुंजें ।

पवन, पानी, धनसार, संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुजें ॥

ए ऊधो, कहियो माधव सों बिरह करद करि मारत लुंजें ।

सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजें ।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश सूरदास द्वारा रचित "सूरसागर" ग्रंथ के "बाललीला" खंड से लिया गया है। इस पद्यांश में कवि कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह वेदना का वर्णन करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

यह पद्यांश गोपियों की विरह वेदना के रूप में एक दृश्य का चित्रण करता है। कृष्ण के बिना कुंज बंजर हो गए हैं। लताएँ, जो पहले बहुत ही सुंदर और शीतल लगती थीं, अब विषम ज्वाला की पुंजी लगती हैं। जमुना बेकार ही बह रही है, पक्षी बेकार ही बोल रहे हैं, कमल बेकार ही फूल रहे हैं, और भौरे बेकार ही गुनगुना रहे हैं। हवा, पानी, धनुष, संजीवनी, दधिसूत किरण, और भानु सब बेकार हो गए हैं।

गोपियाँ कृष्ण के वियोग में इतनी व्याकुल हो गई हैं कि वे आत्महत्या करने को तैयार हैं। वे ऊधो से कहते हैं कि वे कृष्ण से मिलकर ही मरना चाहती हैं। सूरदास कहते हैं कि गोपियों की आँखें कृष्ण के दर्शन के लिए तरस रही हैं और वे बरन ज्यों गुंज रही हैं।

व्याख्या:

इस पद्यांश में सूरदास ने गोपियों की विरह वेदना को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। गोपियाँ कृष्ण के बिना अपना जीवन जीने का कोई कारण नहीं समझती हैं। वे कृष्ण के वियोग में इतनी व्याकुल हो गई हैं कि वे आत्महत्या करने को तैयार हैं।

यह पद्यांश हमें यह भी बताता है कि प्रेम का महत्व कितना अधिक है। जब कोई प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं, तो उनके जीवन में उदासी और विरह छा जाता है।

6. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2020)

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश कुँवर नारायण द्वारा रचित "कविता के बहाने" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि कविता की असीम संभावनाओं पर प्रकाश डालते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

कवि कहते हैं कि कविता एक उड़ान है, जो चिड़िया के बहाने की जाती है। चिड़िया एक छोटा-सा पक्षी है, जिसकी उड़ान सीमित होती है। वह केवल बाहर-भीतर, इस घर उस घर तक ही उड़ सकती है। लेकिन कविता की उड़ान असीम होती है। वह समय और स्थान की कोई सीमा नहीं मानती। वह मनुष्य के हृदय और मन में उतर जाती है।

कवि कहते हैं कि चिड़िया कविता की इस उड़ान को समझ नहीं सकती। वह तो केवल अपने पंखों से उड़ने के लिए ही बनी है। लेकिन कविता का पंख कल्पना है। कल्पना की शक्ति से कविता मनुष्य के हृदय और मन में उतर जाती है।

व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि ने कविता की शक्ति और प्रभाव को बहुत ही सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। कविता एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य के हृदय और मन को छू सकती है। वह मनुष्य को नई प्रेरणा और ऊर्जा दे सकती है।

कवि इस पद्यांश में चिड़िया का उपयोग एक प्रतीक के रूप में करते हैं। चिड़िया एक छोटा-सा पक्षी है, जिसकी उड़ान सीमित होती है। लेकिन कविता एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य की सीमाओं को तोड़ सकती है।

7. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2022)

ज़िंदगी में जो कुछ है, जो भी है

सहर्ष स्वीकारा है;

इसलिये कि जो कुछ भी मेरा है।

वह तुम्हें प्यारा है ।

गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब

यह विचार - वैभव सब

दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब

मौलिक है, मौलिक है

इसलिये कि पल-पल में

जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है -

संवेदन तुम्हारा है ।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित "सहर्ष स्वीकारा है" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि अपने जीवन के अनुभवों और विचारों को व्यक्त करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

कवि इस पद्यांश में कहते हैं कि वे अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त हुए हैं, उसे सहर्ष स्वीकार करते हैं। उन्हें विश्वास है कि जो कुछ भी उनके पास है, वह उनके प्रियजनों का आशीर्वाद है।

कवि कहते हैं कि उनकी गरीबी भी उनके प्रियजनों का आशीर्वाद है। गरीबी ने उन्हें संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने अपने जीवन में कई गंभीर अनुभव प्राप्त किए हैं, जो उनके जीवन को समृद्ध बनाते हैं। उनके विचारों का वैभव भी उनके प्रियजनों का आशीर्वाद है। वे हमेशा नए विचारों की तलाश में रहते हैं।

कवि कहते हैं कि उनकी दृढ़ता भी उनके प्रियजनों का आशीर्वाद है। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना किया है, लेकिन वे कभी भी हार नहीं मानते हैं। उनके भीतर की सरिता भी उनके प्रियजनों का आशीर्वाद है। वे हमेशा नई भावनाओं और विचारों के साथ आगे बढ़ते हैं।

कवि कहते हैं कि उनके सभी अनुभव और विचार मौलिक हैं। वे अपने प्रियजनों की प्रेरणा और आशीर्वाद से प्राप्त हुए हैं।

व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि अपने जीवन के अनुभवों और विचारों को एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं। वे कहते हैं कि जीवन में आने वाली किसी भी चुनौती को भी एक अवसर के रूप में देखा जा सकता है। जो भी व्यक्ति जीवन में संघर्ष करता है, वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

कवि इस पद्यांश में अपने प्रियजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। वे मानते हैं कि उनके प्रियजनों ने ही उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

8. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2022)

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिये
आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है।

दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आइने में चाँद उतर आया है ।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित "दीपावली" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि दीवाली के त्योहार के अवसर पर घर में खुशी और उल्लास का माहौल का चित्रण करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि दीवाली की शाम के दृश्य का चित्रण करते हैं। घरों को पुताई और सजाया गया है। चीनी के खिलौने जगमगाते हैं। माँ के मुखड़े पर एक नर्म दमक है। वह बच्चे के घरों में दिए जला रही है।

आँगन में बच्चा ठुनक रहा है और चाँद को देखकर ललचाया हुआ है। माँ उसे दर्पण देती है और कहती है कि देख, आइने में चाँद उतर आया है।

व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि दीवाली के त्योहार के महत्व को व्यक्त करते हैं। दीवाली एक ऐसा त्योहार है जो खुशी और उल्लास का प्रतीक है। इस दिन घरों को पुताई और सजाया जाता है। लोग नए कपड़े पहनते हैं और मिठाइयाँ खाते हैं।

कवि इस पद्यांश में माँ और बच्चे के बीच के प्रेम को भी व्यक्त करते हैं। माँ बच्चे के लिए चाँद को उतार लाती है। यहाँ चाँद का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है। चाँद को सुंदरता और प्रेम का प्रतीक माना जाता है। माँ अपने बच्चे के लिए सुंदरता और प्रेम का प्रतीक लाती है।

कवि इस पद्यांश में दीवाली के त्योहार की खुशी और उल्लास को बहुत ही सुंदर ढंग से व्यक्त करते हैं।

9. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2023)

नौरस गुंचे पंखड़ियो की नाजुक गिरहें खोले हैं। -

या उड़ जाने को रंगों - बू गुलशन में पर खोले हैं ।

तारे आँखें झपकावे हैं जर्जरर्ज सोये हैं
तुम भी सुनो हो यारो ! शब में सन्नाटे कुछ बोले है
हम हो या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं।
जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले है ।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित "किस्मत" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि किस्मत और इंसान के बीच के संबंध पर विचार करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि प्रकृति के माध्यम से किस्मत और इंसान के बीच के संबंध की तुलना करते हैं।

कवि कहते हैं कि जैसे नौरस गुंचे अपनी पंखुड़ियों की नाजुक गिरहें खोलकर उड़ने को तैयार हैं, वैसे ही इंसान भी अपने जीवन में सफल होने के लिए तैयार रहता है। लेकिन कभी-कभी किस्मत के कारण इंसान अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता।

कवि कहते हैं कि जैसे तारे आँखें बंद करके सो जाते हैं, वैसे ही इंसान भी अपनी किस्मत के सामने निढाल हो जाता है।

कवि कहते हैं कि किस्मत और इंसान दोनों को एक ही काम मिला है। किस्मत इंसान को रोती है और इंसान किस्मत को।

कवि कहते हैं कि जो लोग उन्हें बदनाम करते हैं, वे काश इतना सोच सकें कि वे मेरा परदा खोल रहे हैं या अपना परदा खोल रहे हैं।

व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि ने किस्मत और इंसान के बीच के संबंध को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। कवि कहते हैं कि किस्मत और इंसान दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। किस्मत इंसान को प्रभावित करती है और इंसान किस्मत को प्रभावित करता है।

कवि कहते हैं कि किस्मत के कारण इंसान को कभी-कभी दुख और पीड़ा का सामना करना पड़ता है। लेकिन किस्मत के सामने इंसान को हार नहीं माननी चाहिए। इंसान को अपनी किस्मत को बदलने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

कवि इस पद्यांश में यह भी कहते हैं कि जो लोग दूसरों को बदनाम करते हैं, वे स्वयं को बदनाम करते हैं।

10. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (RBSE 2023)

नभ में पाँति - बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें ।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया ।
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से ।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो ।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें
नभ में पाँती - बँधी बगुलो की पाँखे ।

Ans.

प्रसंग:

यह पद्यांश उमाशंकर जोशी द्वारा रचित "बगुलों के पंख" कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि सायंकालीन प्राकृतिक सौंदर्य के मानव-मन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि सायंकालीन आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन करते हैं। कवि कहते हैं कि बगुलों के पंख इतने सुंदर हैं कि वे उनकी आँखों को चुरा लेते हैं।

कवि कहते हैं कि आकाश में छाए काले बादलों की छाया भी इस दृश्य को और अधिक सुंदर बना देती है। साँझ के समय आकाश में तैरती सफेद काया भी इस दृश्य को अद्भुत बना देती है।

कवि कहते हैं कि यह सौंदर्य उन्हें अपनी माया में बाँध लेता है। वे इस सौंदर्य से बचने का प्रयास करते हैं, लेकिन वे असफल हो जाते हैं।

व्याख्या:

इस पद्यांश में कवि ने सायंकालीन प्राकृतिक सौंदर्य के मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव को बहुत ही सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। कवि कहते हैं कि प्राकृतिक सौंदर्य मानव-मन को मोह लेता है। यह मनुष्य को अपनी माया में बाँध लेता है।

कवि इस पद्यांश में यह भी कहते हैं कि प्राकृतिक सौंदर्य को संरक्षित करना चाहिए। हमें इस सौंदर्य को नष्ट नहीं करना चाहिए।